डॉ॰ सलोनी
हिन्दी विभाग
बी॰ंस कॉलेज,
समस्तीपुर

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा
प्रथम खंड
(B. A Hons Part I)
प्रथम पत्र

पाठ्य विषय – छायावाद युगीन काव्य

यद्यपि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय से ही नए युग का अरुण उदित हो गया था तथापि उस युग की कविताओं में प्राचीन काल की झलक थी। नए युग में आकर कविता को भी अपने बंधन खलने लगे और वह स्वतंत्रता की ओर बढ़ी। मैथिली शरण गुप्त के समय में कहा जा सकता है साहित्य में नवयुग का वास्तविक आरंभ हुआ। भारतेन्दु काल के लिए गुप्त जी के शब्दों में कह सकते हैं

सूर्य का यद्यपि नहीं आना हुआ,
किंतु देखो रात्रि का जाना हुआ।

जयशंकर प्रसाद की कविताओं में भाव और अभिव्यक्ति के नए रूप दिखाई दिए। पंत और निराला की कविता में नवयुग के सूर्य की पूर्ण प्रभा स्फुटित स्वातन्त्र्योन्मुखी रश्मियों का प्रकाश मिला। नए ढंग की स्वतंत्र प्रवृत्ति भाव और छंद दोनों में दिखाई पड़ने लगी। इन कवियों के हाथ में कविता छंद के वर्णों के लघु-गुरु क्रम और मात्राओं की गणना के बंधन से मुक्त होकर उन्मुख सरिता की भाँति अपनी ताल और लय के साथ बहने लगी। निराला की कविता जूही की कली ऐसे मुक्त छंद का सुंदर उदाहरण है —

"विजन वन वल्लरी पर सोती थी सुहाग भरी—
जूही की कली, दृग बंद किए शिथिल पत्रांक में।"

2

छंद स्वातंत्र्य के साथ आधुनिक अर्थात् छायावादी कविता में संगीत का भी महत्व देखा गया। इस काल में साहित्य, संगीत और कला तीनों का समन्वय दिखता है। लोकगीत की शैली में भी उत्कृष्ट साहित्यिक रचना होने लगी। नई उपमा, नए रूपक, नए प्रतीक प्रयोग किए जाने लगे तो अंग्रेजी प्रभाव के कारण इस कविता में नए अलंकरण आए और पुराने अलंकारों से भी नवीनता लाई जाने लगी। विशेषण विपर्यय (Transferred Epithet), मानवीकरण (Personification) जैसे नए अलंकारों का प्रचुर प्रयोग होने लगा।

काव्य के क्षेत्र में आए इस बदलाव को पहले तो कुछ साहित्य आचार्यों ने हल्केपन से 'छायावादी काव्य' नाम से अभिहित किया किंतु बाद में साहित्य सुधियों द्वारा यही नाम इस अभिनव काव्यधारा का अभिधान बन गया।

लोगों का ध्यान उपयोगिता और आदर्शवाद की ओर अधिक होने के कारण द्विवेदी युग में इतिवृत्तात्मकता और परिगणनात्मकता का प्राधान्य मिलता है। कह सकते हैं इस युग में बुद्धिवाद और विज्ञान का प्रभाव था। विज्ञान एक संकुचित प्रपंच का आश्रय लेता है। वह इन्द्रियजन्य ज्ञान से बाहर नहीं जाता किंतु संसार में जो कुछ दिखाई पड़ता है वही सब कुछ नहीं है। मूर्त जगत में भी चांद की झंकार की भी अमूर्त छाया रहती है, इन्द्रिय गोचर जगत में इन्द्रियों से परे की चीज रहती है।

→

सभी चीजें कहीं-कहीं सीमाओं में आबद्ध नहीं रहती। एक की सीमा दूसरे में प्रवेश कर जाती है। यह संसार जड़ और चेतन की सम्मिलित भूमि है, किन्तु इसके क्षेत्र नितान्त अलग नहीं है — चेतन और जड़ की सीमाओं से आबद्ध नहीं है। जड़ वस्तुएं भी अपनी सांकेतिक भाषा में मनुष्य से बोलती नजर आती है, वे चेतन को प्रभावित करती है। यही इस बात का प्रमाण है कि जड़ और चेतन में नितान्त पार्थक्य नहीं है। यह भारतीय एकात्मवाद का प्रभाव है।

छायावाद इन्द्रिय गोचर जगत का भावजगत के साथ समन्वय करता है। मनुष्य के लिए जड़ जगत पत्थर की भाँति अभेद्य नहीं रहता वरन वह मोम की भाँति उसके भावों के साँचे में ढल जाता है। जड़ पदार्थ भी आत्मीय भाव धारण कर लेते हैं और प्रकृति मनुष्य की सहचरी बन जाती है।

छायावादी कवि प्रकृति में भी मानवी भावों की छाया देखता है। उसके लिए पुष्प की पंखुड़ियाँ मधु के कटोरे बन जाते हैं, अलि-बालाएँ मधु पान करती हैं। तारागण आकाश के नेत्र बन जाते हैं और कवि उनमें मौन संकेत पाता है।

आचार्य शुक्ल ने 'छायावाद' शब्द छाया अर्थात् छायाभास से निकला हुआ बताया है। कविवर 'प्रसाद' ने बतलाया है कि प्राचीन संस्कृत काव्य में 'छाया' शब्द मोती की आभा के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इस संबंध में वे लिखते हैं — "अभिव्यक्ति का यह निराला ढंग अपना स्वतंत्र लावण्य रखता है।

जाती है भीतर छाया की जैसी तरलता होती है वैसे ही कांति की तरलता अंग में लावण्य कही जाती है। इस लावण्य को संस्कृत साहित्य में छाया और विच्छति के द्वारा कुछ लोगों ने निरूपित किया है।

'छाया' स्त्रियों के गुणों में एक मानी गयी है। इसका अर्थ होता है अनुरागपूर्ण सूक्ष्म भंगिमा। छायावाद उसी से संबद्ध है, जो वस्तु का मूल्य बढ़ा देती है।

संभव है छायावाद को लोगों ने उसकी ईषत् अस्पष्टता के कारण इस नाम से पुकारा हो और फिर यह नाम प्रचलित हो गया हो। जो भी हो, इसमें छाया की सी कोमलता और स्वप्नप्रियता तो है ही। छायावाद कोरे वस्तुवाद से संतुष्ट नहीं होता वह वस्तु में आध्यात्मिकता और स्थूल में सूक्ष्म की एक स्वप्निल आभा देखता है। इसने इसे अपने अनुकूल एक शैली बना ली। इसमें अमूर्त से मूर्त की तुलना करना, मानवीकरण और विशेषण-विपर्यय अलंकारों का महत्व, सुंदर शब्द चित्र, भाषा में लाक्षणिक प्रयोगों का प्राचुर्य, छन्द में स्वच्छंदता आदि मुख्य विशेषताएँ हैं।

शैली की इस नवीनता के अतिरिक्त छायावाद में बुद्धिवाद की अपेक्षा भावुकता को अधिक स्थान दिया गया है, वह कोरे वस्तुवाद से जरा ऊपर उठना चाहता है इसने मुक्त सौंदर्य को शुद्ध निर्मल रूप दिया है।

→

इसमें जो प्रेम के गीत गाए गए हैं उसमें आत्म-समर्पण की कोमल भावना अधिक है। इसी के साथ हमारा ध्यान विश्व में व्याप्त एक विलक्षण चेतना की ओर आकृष्ट होता है। श्रीमती महादेवी वर्मा ने अपने 'आधुनिक कवि' नामक संग्रह की भूमिका में इन दो बातों पर विशेष जोर दिया है।

छायावाद पर सबसे बड़ा आक्षेप है कि वह जीवन से हटा हुआ है। इसमें 'ले चल मुझे भुलावा देकर, मेरे नाविक धीरे-धीरे' तथा 'तज कोलाहल की अवनी रे' के पलायनवाद की ही प्रवृत्ति है। छायावादी कवि जीवन की विषमताओं से बचने के लिए एक कल्पित सौंदर्य लोक में विचरता है। जीवन में किसी अंश तक सौंदर्योपासना और भावुकता आवश्यक है लेकिन उसे जीवन का ध्येय बना लेना ठीक नहीं कहा जा सकता। ध्यान से देखा जाए तो यह ठीक नहीं जान पड़ता। जहाँ मुक्ति की कामना है तो हर बंधन से, उन्मुक्त गगन की चाह है पर समाज भी उसमें शामिल है।

पंत जी की 'चूलि', 'स्वर्णरश्मि' में युग को नई दिशा देने का प्रयास है तो निराला को देखें तो वे तो जागरण के वैतालिक ही सिद्ध होते हैं। अतएव छायावाद इन सभी आक्षेपों से मुक्त होकर साहित्य के आकाश में एक नए युग का शंखनाद करता है।